Indian Fashion –
Through the Ages : Series-I

Fashion is a universal subject, a language understood and spoken by one and all. Fashion is one of the most popular modes of expression. It describes the ever-changing style of clothes worn by those with cultural status. Fashions vary greatly within a society over time and are effected by age, occupation, location and social class.

India's recorded history of clothing goes back to the fifth millennium BC in the **Indus Valley Civilization**. India was one of the first places where cotton was cultivated and used even as early as 2500 BC during the Harappan era. The remnants of the ancient Indian clothing can be found in the figurines discovered from the sites near the Indus Valley Civilization, the rock cut sculptures, the cave paintings and human art forms found in temples and monuments. Dating back to the Mohenjo-daro civilization, the earliest preliminary version was found in the statue of Mother Goddess wearing an elaborate headgear supported by a pair of bands and a brooch, tight-fitted tunic and skirt fastened with a broad waist-band using a medallion like clasp. She is adorned with two necklaces, the smaller one has a set of four cylindrical pendants. The "Priest-king" and other stone figures are also depicted wearing a long robe over the left shoulder, leaving the right shoulder bare. The clotheng system was also related to the social and economic status of the person. The upper classes of the society wore fine muslin garments and silk fabrics while the common classes wore garments made up of locally made fabrics.

During the **Mauryan Period**, the most common attire of the people was antariya, which they used to wear as a lower garment. A cloth was covered in lehanga style to form a tubular skirt. An embellished long piece of cloth wrapped around the waist pleated into the antariya was called patka. As an upper garment, people's main garb was uttariya, a long scarf. The difference existed only in the manner of wearing. Textiles were dyed and printed. Resist dyeing and hand printing has been mentioned by Megasthenes as a common sight during the Mauryan period as has glazed cotton. Felting of fibers instead of weaving was also a generally used technique.

The **Mughals** played a vital role in Indian Fashion and exerted a huge influence on the Indian dressing style. Men wore jama which was considered as the main royal garb of Mughal emperors, patka to keep the jewelled sword around the waist of jama. The patka is a type of girdle made of a fine fibre which is hand painted, printed or embroidered and *choga* embroidered, long sleeved coats generally worn over jamas and angrakhas. Mughal women wore a large variety of ornaments from head to toe. Their costumes generally included Peshwaj, Yalek, Pajama, Churidar, Dhilija, Garara and Farshi, they all included head ornaments, anklets and necklaces. This was done as a distinctive mark of their prosperity and their rank in society. Head-dresses were often worn by Mughal women and were available in various styles. **Empress Nur Jahan**, consort of Jahangir, epitomising beauty, wore a short-sleeved long or short jacket over her kurta. While she wore it to maintain her sophistication, the outfit made a style statement.

Awadh (the region of the modern state of Uttar Pradesh around Ayodhya, west of Varanasi) has historically been among the most important regions in India, politically, religiously and socially and holds a vital position with respect to the development of Indian fashion. For centuries, the Awadhi style of dressing has intrigued fashion enthusiasts. Its fabrics, embroideries and precision in design, influence connoisseurs of fashion and style enthusiasts alike. The Nawabs, who were predominant in Awadh during the 18th and 19th centuries, particularly influenced the evolution of fashion. The aristocracy of Lucknow spent lavishly on their dresses. This had an impact on the dresses of the courtiers and the Awadhi people in general. The emphasis was not only on costumes and textiles, but also on how they were worn.

Indian Princely states also displayed evolution of fashion through fusion of local traditional dresses with the trends from other parts of India. For instance, for aristocratic Rajput men court dresses included angarkhi, pagdi, chudidar pyjama and a cummerbund (belt). Dhoti was also in tradition but it was worn in different styles across various princely states. This period also saw a fusion of diverse Indian attire and clothing trends infused with elements of European fashion.

Department of Posts is pleased to issue a set of four Commemorative Postage Stamps as Series – I on the theme "Indian Fashion – Through the Ages".

Credits:

Text	:	Based on the material provided by Prof. Manika Walia and other sources.
Stamps/Miniature Sheet/ First Day Cover/Brochure	:	Shri Suresh Kumar
Cancellation Cachet	:	Smt Alka Sharma

भारतीय फैशन –
परिधान परंपरा : श्रृंखला–I

फैशन एक सर्वव्यापी विषयवस्तु है, यह एक ऐसी भाषा है जिसे सभी समझते और बोलते हैं। फैशन अभिव्यक्ति के सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यमों में से एक है। यह सांस्कृतिक प्रतिष्ठा वाले लोगों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों की सदैव बदलती रहने वाली शैली को दर्शाता है। फैशन समय के साथ समाज के अंदर तेजी से परिवर्तित होता रहता है और इस पर आयु, व्यवसाय, स्थान और सामाजिक वर्ग का भी प्रभाव पड़ता है।

भारत में परिधानों के लिखित इतिहास के अनुसार भारत में वस्त्रों का चलन 5वीं सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व **सिंधु घाटी की सभ्यता** में हुआ था। भारत उन प्रथम स्थानों में से एक था जहां कपास की खेती की जाती थी और इसका प्रयोग किया जाता था। यहां तक कि हड़प्पा सभ्यता के काल के दौरान 2500 ईसा पूर्व से पहले भी कपास का प्रयोग किया जाता था। प्राचीन भारतीय वस्त्रों के अवशेष सिंधु घाटी सभ्यता के निकट के क्षेत्रों से पाई गई लघु मूर्तियों, शैल प्रतिमाओं, गुफा चित्रों और मंदिरों तथा स्मारकों में पाये गये मानव कला रूपों में देखे जा सकते हैं। प्रारम्भिक वर्णनों के अनुसार मोहनजोदड़ो सभ्यता काल की पाई गई देवी मां की मूर्ति के सिर पर एक शिरोवस्त्र पाया गया जिसे दो पट्टियों और एक जड़ाऊ पिन के सहारे स्थिर किया गया था तथा उसे एक कसा हुआ अंगरखा, चुन्नी और स्कर्ट पहनाया हुआ था जिसे चौड़ी कमरपेटी के साथ बांधा गया था। इस चौड़ी कमरपेटी पर प्राचीन पदक के रूप में एक बकसुआ था। इस प्रतिमा के गले में दो कंठहार थे जिसमें से छोटे हार में चार बेलनाकार के पेंडेंट का एक सेट था। "पुजारी–राजा" और अन्य पत्थर की प्रतिमाओं के बायें कंधे पर एक लंबा लबादा (चोगा) भी दर्शाया गया है और दायें कंधे पर कुछ नहीं रखा गया है। वस्त्रों की व्यवस्था व्यक्ति की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति से भी सम्बद्ध थी। समाज के उच्च वर्ग के लोग महीन मलमल और रेशम के परिधान पहनते थे जबकि सामान्य वर्ग के लोग स्थानीय निर्मित वस्त्रों के परिधान पहनते थे।

मौर्य काल के दौरान लोगों का सबसे सामान्य पहनावा अंतरिया था जिसे अधोवस्त्र के रूप में पहना जाता था। वस्त्र को लंहगा शैली में बनाया गया था जिसे नलीदार, ट्यूबलर स्कर्ट का आकार दिया गया था। कपड़े का एक लंबा अलंकृत भाग कमर के चारों ओर लपेटा जाता था, जिसे अंतरिया में सुस्पष्ट रूप से प्रयोग में लाया जाता था। इसे पटका नाम से जाना जाता था। सामान्य व्यक्तियों द्वारा ऊपर पहने जाने वाले परिधान को उत्तरिया कहा जाता था जो एक लम्बे स्कार्फ के रूप में होता था। यह अंतर केवल इसे पहनने की शैली में था। परिधान रंजित एवं छपाईयुक्त होते थे। मेगस्थनीज द्वारा मौर्यकाल के दौरान प्रतिरोध रंगाई एवं हस्त छपाई वाले परिधानों का उल्लेख सर्वत्र दिखने वाले परिधानों के रूप में किया गया है। प्रतिरोध रंगाई एवं हस्त छपाई से सूती कपड़े पर एक प्रकार की चमक आ जाती थी। बुनाई के स्थान पर वस्त्रों के रेशों की भराई, फेल्टिंग एक सामान्यतः प्रयुक्त तकनीक थी।

मुगलों ने भारतीय फैशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिसका प्रभाव भारतीय परिधान शैली पर स्पष्ट नजर आता है। पुरूष जामा पहनते थे जिसे मुगल सम्राटों का प्रमुख शाही परिधान माना जाता था। 'पटका' एक प्रकार का महीन कपड़े से निर्मित कमरबंद था जो कि हस्त चित्रित, छपाई युक्त अथवा कशीदाकारीयुक्त होता था। 'चोगा' एक प्रकार का कशीदाकारीयुक्त, लंबी आस्तीन वाला कोट होता था जिसे सामान्यतः जामा एवं अंगरखा के ऊपर पहना जाता था। मुगल महिलाएं सिर से पैरों तक विभिन्न प्रकार के आभूषण धारण करती थी। उनके परिधानों में विशेष रूप से पेशवाज, पैशक, पाजामा, चूड़ीदार, चिलिज़ा, गरारा और फर्शी शामिल थे। इन सब परिधानों में सिर के आभूषण, पाजेब एवं कंठहार सम्मिलित थे। ये सब उनकी समृद्धि और समाज में उनकी हैसियत दर्शाता था। मुगल महिलाओं द्वारा बहुधा पगड़ी पहनी जाती थी जो विभिन्न शैलियों में उपलब्ध होती थी। जहांगीर की पत्नी, सुंदरता की प्रतीक **साम्राज्ञी नूरजहां** अपने कुर्ते पर छोटी आस्तीन की लंबी अथवा छोटी जैकेट पहना करती थी। यह यह जैकेट अपने परिष्कृत व्यक्तित्व को दर्शाने के लिए पहनती थी जो एक विशेष पोशाक बन चुकी थी।

अवध (वाराणसी के पश्चिम में स्थित अयोध्या के आस–पास का वर्तमान उत्तर प्रदेश का क्षेत्र) ऐतिहासिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से भारत के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक रहा है और भारतीय फैशन के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। शताब्दियों से अवधी शैली के परिधानों ने फैशन समर्थकों को लुभाया है। इसके कपड़े, कशीदाकारियां और डिजाइन में सूक्ष्मता ने फैशन के जानकारों और शैली (स्टाइल) प्रशंसकों, समर्थकों को एक साथ प्रभावित किया है। नवाबों, जो 18वीं एवं 19वीं शताब्दी के दौरान अवध में प्रबल थे, ने विशेष रूप से फैशन के क्रमिक विकास पर प्रभाव डाला है। लखनऊ के अभिजात्य वर्ग अपने परिधानों पर उदारतापूर्वक खर्च करते थे। इससे दरबारियों और सामान्य रूप से अवधी लोगों के परिधानों पर असर पड़ा था। यहां न केवल परिधानों एवं वस्त्रों पर ध्यान दिया जाता था अपितु उनको कैसे पहना जाता था, इस पर भी विशेष ध्यान दिया जाता था।

भारत की रियासतों ने भी भारत के विभिन्न भागों के ट्रेंड्स के साथ स्थानीय पारंपरिक वेशभूषाओं का मिलाप करते हुए फैशन के क्रमिक विकास को प्रदर्शित किया। उदाहरण के लिए कुलीन राजपूत पुरूषों की दरबार की पोशाकों में अंगरखी, पगड़ी, चूड़ीदार पाजामा और कमरबंद (बेल्ट) शामिल होती थी। धोती भी प्रचलन में थी किंतु इसे विभिन्न रियासतों में विभिन्न शैलियों में पहना जाता था। इस काल में विविध भारतीय पोशाकों और परिधानों के ट्रेंड्स को यूरोपीय फैशन के सिद्धांतों के साथ एक साथ संलयन होते देखा गया है।

डाक विभाग "भारतीय फैशन – परिधान परंपरा : श्रृंखला–I" विषय पर चार स्मारक डाक टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार –

पाठ : प्रो. मणिका वालिया एवं अन्य स्रोतों द्वारा मुहैया कराई गई सामग्री के आधार पर।

डाक टिकट / मिनिएचर शीट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : श्री सुरेश कुमार

विरूपण मोहर : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 1500 पैसा(2), 500 पैसा(2)
Denomination	: 1500p (2), 500p (2)
मुद्रित डाक–टिकटें	: 5.0 लाख प्रत्येक
Stamps Printed	: 5.0 Lakh each
मुद्रित मिनियेचर शीट	: 1.1 लाख
Miniature Sheet Printed	: 1.1 Lakh
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक
Printer	: India Security Press, Nasik

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00